International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सरस्वती नदी बेसिन की सभ्यतागत: एक विश्लेषण

प्रमोद
इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
Reg- No 23—BMU—7235
parmod8708905720@gmail-com
डॉ. अशोक कुमार
प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

सार
प्रस्तुत शोध—पत्र सरस्वती नदी बेसिन की सभ्यतागत एवं सांस्कृतिक विरासत का ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करता है। सरस्वती नदी भारतीय सभ्यता की उत्पति, विकास और सांस्कृतिक निरन्तरता में केन्द्रीय भूमिका निभाने वाली नदी रही है।[1] वैदिक साहित्य में इसे ''नदितमा'', ''अंबितमे'' और ''देवीतमे'' जैसे विश्लेषणों से संबोधित किया गया है,[2] जो इसके भौगोलिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट करते हैं। सरस्वती नदी बेसिन सिंधु—सरस्वती (हड़प्पा) सभ्यता का प्रमुख क्षेत्र रहा है[3], जहाँ सुव्यवस्थित नगर योजना, उन्नत जल निकासी प्रणाली, कृषि—आधारित अर्थव्यवस्था, शिल्प एवं व्यापार के प्रमाण प्राप्त होते हैं। राखी गढ़ी, कालीबंगा, बनवाली, फरमाना एवं अन्य पुरातात्विक स्थल इस क्षेत्र की विकसित सामाजिक—आर्थिक संरचना को रेखांकित करते हैं।[4] आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों — विशेषत: उपग्रह चित्रण, भू—वैज्ञानिक सर्वेक्षण एवं पेलियों—चैनल अध्ययन से यह सिद्ध हुआ है की सरस्वती नदी का विस्तार प्रवाह क्षेत्र था, जो वर्तमान घग्गर—हकरा नदी प्रणाली से संबद्ध रहा है।[5] इस प्रकार यह शोध—पत्र सरस्वती नदी बेसिन को भारतीय सभ्यता की एक मूलभूत सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित करता है।

मुख्य शब्द
सरस्वती नदी, नदी बेसिन, सिंधु—सरस्वती सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता, वैदिक साहित्य, घग्गर—हकरा नदी प्रणाली, पुरातात्विक स्थल, सांस्कृतिक विरासत, पेलियो—चैनल अध्ययन,

---

[1] ऋग्वेद, मण्डल 6, सूक्त 61, Lal, B.B., The Saraswati Flows ON, Aryan Books, New Delhi, 2002.
[2] ऋग्वेद, मण्डल 7, सूक्त 95, मंत्र 2.
[3] Gupta, S.P., The Indus-Saraswati Civilization, Pratibha Prakashan, Delhi, 1996.
[4] ASI, Excavation Report: Rakhigarhi, 2014; possehl, G.L., the Indus civilization: A contemporary Perspective, Alta Mira Press, 2002.
[5] Yash Pal et al., " Remote sensing of the Ghaggar River," Man and Environment, Vol-9, 1984.

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

उपग्रह चित्रण, भू–वैज्ञानिक सर्वेक्षण, प्राचीन भारतीय सभ्यता, नगर योजना, कृषि अर्थव्यवस्था, सामाजिक–आर्थिक संरचना

प्रस्तावना

भारतीय उपमहाद्वीप का इतिहास प्राचीन नदियों और उनके आसपास विकसित हुई सभ्यताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। इन नदियों में सरस्वती नदी का विशेष स्थान है। वैदिक साहित्य में सरस्वती नदी को अत्यंत पवित्र, विशाल और जीवनदायिनी नदी के रूप में वर्णित किया गया है। ऋग्वेद में सरस्वती को ''नदियों की माता'' तथा ''महान और प्रवहमान नदी'' कहा गया है। यह नदी केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं रही, बल्कि इसके विकसित हुई सभ्यता ने भारतीय इतिहास, संस्कृति और समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राचीन काल में सरस्वती नदी का प्रवाह उत्तर–पश्चिम भारत के विस्तृत क्षेत्र में माना जाता है। भू–गर्भीय और पुरातात्विक अध्ययनों के आधार पर यह माना जाता है की सरस्वती नदी का संबंध वर्तमान की घग्गर नदी तथा हकरा नदी, नदी तंत्र से रहा है। अनेक विद्वानों का मत है की प्राचीन सरस्वती नदी हिमालय से निकलकर हरियाणा, राजस्थान और पाकिस्तान के कुछ भागों से होती हुई समुद्र में मिलती थी। इस विस्तृत नदी तंत्र के किनारे अनेक प्राचीन बस्तियाँ और नगर विकसित हुए, जो एक विकसित और संगठित सभ्यता के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

पुरातात्विक अनुसंधानों से यह स्पष्ट हुआ है की सरस्वती नदी बेसिन में प्राचीन काल में एक समृद्ध सभ्यता या ''सिंधु–सरस्वती सभ्यता'' के नाम से भी जाना जाता है। इस सभ्यता के अनेक प्रमुख स्थल जैसे की राखी गढ़ी, कालीबंगा और बनावली में सरस्वती नदी के प्राचीन प्रवाह क्षेत्र में स्थित पाए गए हैं। इन स्थलों में प्राप्त अवशेषों की जानकारी से यह साबित होता है की इन में नियोजित नगर व्यवस्था, सड़कों का जाल, जल प्रबंधन प्रणाली, कृषि के प्रमाण तथा प्राप्त मृदभांडों से यह संकेत मिलता है की यहाँ एक सुव्यवस्थित और विकसित सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था मौजूद थी। सरस्वती नदी बेसिन की सभ्यता केवल नगरीय विकास तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह कृषि, व्यापार, तकनीक कौशल और सांस्कृतिक जीवन में भी अत्यंत उन्नत थी। इस क्षेत्र में कृषि का विकास नदी के जल और उपजाऊ भूमि के कारण संभव हुआ। पुरातात्विक साक्ष्यों से यह भी ज्ञात होता है की यहाँ के निवासी नियोजित खेती, पशुपालन और व्यापार में कुशल थे। मिट्टी के बर्तनों, धातु के उपकरणों और विभिन्न हस्तशिल्प वस्तुओं से यह स्पष्ट होता है की इस सभ्यता में तकनीक दक्षता तो थी ही और साथ में कलात्मकता का भी उच्च स्तर था।

सरस्वती नदी बेसिन की सभ्यता का एक महत्वपूर्ण पहलू इसका सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभाव भी है। वैदिक साहित्य में सरस्वती नदी को ज्ञान, विधा और पवित्रता का प्रतीक माना गया है। यह तथ्य इस ओर संकेत करता है की इस क्षेत्र का वैदिक संस्कृति के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा होगा। अनेक विद्वान यह मानते हैं की सरस्वती नदी के तट पर वैदिक आर्यों की प्रारंभिक गतिविधियां और सांस्कृतिक परम्पराएं विकसित हुई, जिसने आगे

चलकर भारतीय सभ्यता के स्वरूप को प्रभावित किया। हालांकि समय के साथ प्राकृतिक और भूगरभीय परिवर्तनों के कारण सरस्वती नदी का प्रवाह धीरे–धीरे कम होता गया और अंततः यह नदी लुप्तप्राय हो गई। इसके पीछे कारण हिमालय जलस्रोतों का मार्ग परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन तथा टेक्टोनिक गतिविधियां जैसे कई कारण माने जाते हैं। नदी के लुप्त होने से इस क्षेत्र की सभ्यता पर भी गहरा प्रभाव पड़ा और कई नगर धीरे–धीरे समाप्त हो गए या लोगों ने अन्य क्षेत्रों की ओर पलायन कर लिया।

वर्तमान समय में सरस्वती नदी और उसके बेसिन से संबंधित शोध पुरातत्व, भूगोल, भूगर्भशास्त्र और इतिहास के विद्वानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। उपग्रह चित्रों, भूगरभीय सर्वेक्षणों और पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से इस क्षेत्रों के बारे में नई–नई जानकारियाँ प्राप्त हो रही हैं। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता जा रहा है की सरस्वती नदी बेसिन प्राचीन भारत की एक महत्वपूर्ण सभ्यता गत धुरी रहा है। अतः ''सरस्वती नदी बेसिन की सभ्यता गत : एक विश्लेषण'' विषय का अध्ययन इस क्षेत्र में विकसित प्राचीन सभ्यता की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विशेषताओं को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन न केवल भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है की किस प्रकार नदियां मानव सभ्यता के विकास और उसके उत्थान व पतन में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

सरस्वती नदी बेसिन का भौगोलिक विस्तारः–

सरस्वती नदी बेसिन का भौगोलिक विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर से पश्चिमी भाग का एक अत्यंत एवं महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय रहा है। प्राचीन ग्रंथों व पुरातात्विक साक्ष्यों आधार पर आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह स्पष्ट होता है की सरस्वती नदी का प्रवाह एक विस्तृत भू–भाग में फैला हुआ था, जिसने प्राचीन सभ्यताओं के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई। भूगरभीय एवं उपग्रह आधारित अध्ययनों – विशेष रूप से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा किए गए शोध से यह प्रमाणित हुआ है की सरस्वती नदी का उद्‌गम हिमालय क्षेत्र से माना जाता है। यह नदी शिवालिक पर्वतमाला से निकलकर हरियाणा, पंजाब, राजस्थान होते हुए गुजरात के रण क्षेत्र तक प्रवाहित होती थी।[6] इस प्रकार इसका विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण पश्चिम में कच्छ के रण तक था, जो इसे प्राचीन भारत की प्रमुख नदियों में से एक बनाता है। वर्तमान में जिस घग्गर–हकरा नदी प्रणाली को देखा जाता है,[7] उसे अधिकांश विद्वान प्राचीन सरस्वती नदी का अवशेष मानते हैं। हरियाणा के आदिबद्री क्षेत्र से लेकर राजस्थान के हनुमान गढ़, श्रीगंगानगर और आगे पाकिस्तान के चोलिस्थान मरुस्थल तक इस सुखी नदी के पटों को स्पष्ट रूप से देखे जा

---

[6] भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), रिमोट सेन्सिंग स्टडीस आन सरस्वती रिवर, 2012.

[7] यशपाल एवं अन्य, "रिमोट सेंसिंग ऑफ द 'लॉस्ट' सरस्वती रिवर", प्रोसीडिंग्स ऑफ इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज, 1984.

IJARMT
International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सकता है। उपग्रह चित्रों में इन प्राचीन नदी मार्गों के चिन्ह स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जो इस तथ्य की पुष्टि करते हैं की यहाँ कभी एक विशाल नदी प्रवाहित होती थी।

सरस्वती नदी बेसिन की भौगोलिक संरचना अत्यंत अनुकूल थी, जिसने यहाँ मानव बसा वट को प्रोत्साहित किया।[8] इस क्षेत्र की मिट्टी उपजाऊ ओर जलोढ़ थी, जो कृषि के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है। नदी के जल से सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने के कारण यहाँ गेंहू, जौ तथा अन्य फसलों की भी खेती विकसित हुई। इसके साथ ही, इस क्षेत्र में पर्याप्त जल संसाधन और समतल भू–आकृतियां होने के कारण नगरों और बस्तियों का विकास भी सुगमता से संभव हुआ। इस बेसिन का विस्तार केवल कृषि तक सीमित नहीं था, बल्कि यह व्यापार और आवागमन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण था। सरस्वती नदी के तट पर स्थित बस्तियां आपस में जुडी हुई थीं, जिससे वस्तुओं, तकनीक और सांस्कृतिक आदान प्रदान को बढ़ावा मिला। पुरातात्विक स्थलों जैसे राखी गढ़ी, कालीबंगा और बनावली का इसी नदी तंत्र के किनारे स्थित होना भी इस बात का प्रमाण है की यह क्षेत्र एक सघन और विकसित सभ्यता गत क्षेत्र था।[9] आधुनिक शोधों में रिमोट संेसिग, भू–भौतिकीय सर्वेक्षण तथा पुरातात्विक उत्खननों का भी व्यापक उपयोग किया जा रहा है।

सरस्वती नदी बेसिन का विकासः–

सरस्वती नदी बेसिन का विकास भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सरस्वती नदी के किनारे मानव जीवन का संगठित रूप धीरे–धीरे विकसित हुआ,[10] जहाँ प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ने स्थायी बसावट को संभव बनाया। हिमालय से आने वाले जल स्रोतों के कारण इस क्षेत्र में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का भी निर्माण हुआ, तथा जिससे कृषि की शुरुआत हुई और मानव समूहों ने स्थायी रूप से बसना प्रारंभ किया। समय के साथ इस क्षेत्र में कृषि का विस्तार हुआ, जिसमें अनेक फसलों की खेती की जाने लगी तथा नदी के जल का उपयोग भी सिंचाई के लिए किया जाने लगा, जिससे उत्पादन में वृद्धि हुई और अधिशेष अनाज का निर्माण हुआ। इसी अधिशेष के कारण व्यापार और विनिमय प्रणाली का विकास हुआ[11], जिसने इस क्षेत्र को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाया। पशुपालन भी यहाँ की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग था, जिससे जीवनयापन के साधनों में विविधता आई। सरस्वती नदी बेसिन का विकास केवल कृषि तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यहाँ ''नगरीकरण की प्रक्रिया भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।'' इस क्षेत्र में विकसित नगरों को सिंधु घटी सभ्यता का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। राखी गढी, बनवाली, कालीबंगा जैसे स्थलों से प्राप्त अवशेष यह प्रमाणित करते हैं की यहाँ सुव्यवस्थित नगर योजना, जल

[8] ग्रेगरी एल. पोस्सेल, इंडस सिविलाइजेशनः ए कॉन्टेम्परारी पर्सपेक्टिव, 2002.
[9] एस. पी. गुप्ता, द इंडस सरस्वती सिविलाइजेशन, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996.
[10] एस. पी. गुप्ता, द इंडस सरस्वती सिविलाइजेशन, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996, पी पी. 45–60.
[11] ग्रेगरी एल. पोस्सेल, इंडस सिविलाइजेशनः ए कॉन्टेम्परारी पर्सपेक्टिव, 2002, पी पी. 70–95.

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

निकासी प्रणाली और पक्के निर्माण कार्य विकसित थे। यह सभी तत्व इस बात के संकेत हैं की इस क्षेत्र में एक उन्नत और संगठित समाज का निर्माण हो चुका था।
''तकनीक दृष्टि से भी यह क्षेत्र अत्यंत विकसित था''। यहाँ मृदभांड निर्माण, धातु उपकरणों का उपयोग तथा विभिन्न प्रकार के आभूषणों का निर्माण किया जाता था। इससे यह स्पष्ट होता है की लोगों में तकनीकी कौशल और कलात्मक समझ दोनों का विकास तभी संभव हुआ था। सांस्कृतिक रूप से भी यह क्षेत्र महत्वपूर्ण रहा, क्योंकि ऋग्वेद में सरस्वती नदी का उल्लेख इसे ज्ञान, संस्कृति और धार्मिक आस्था का केंद्र दर्शाता है। हालांकि समय के साथ–साथ प्राकृतिक और भूगरभीय परिवर्तनों के कारण सरस्वती नदी का जल प्रवाह कम होता गया[12]। सहायक नदियों के मार्ग परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन के कारण यह नदी धीरे–धीरे लुप्त हो गई, जिसका प्रभाव इस क्षेत्र की सभ्यता पर पड़ा। परिणामस्वरूप कई नगरों का पतन हुआ और लोगों को अन्य क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित होना पड़ा। फिर भी, आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान विशेष रूप से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और जीअलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है की सरस्वती नदी बेसिन प्राचीन भारत की एक अत्यंत समृद्ध और विकसित सभ्यता गत क्षेत्र था।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासतः–

सरस्वती नदी बेसिन भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जहाँ प्राचीन काल में जीवन केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं था बल्कि गहराई से जुड़ा हुआ था। सरस्वती नदी को प्राचीन ग्रंथों में केवल एक जलधार के रूप में नहीं, बल्कि पवित्रता, ज्ञान और समृद्धि के प्रतीक के रूप में देखा गया है। ऋग्वेद में इसका वर्णन एक महान नदी के रूप में मिलता है, जो जीवन को तो पोषित करती ही है साथ के साथ आध्यात्मिक उन्नति का भी माध्यम रही थी। इस प्रकार, यह क्षेत्र वैदिक परंपराओं और धार्मिक विचारों के विकास की भी प्रमुख आधार बनी थी। इस क्षेत्र में विकसित सांस्कृतिक जीवन विविधता और परिष्कार से युक्त थी। यहाँ के लोगों ने अपने दैनिक जीवन में धार्मिक अनुष्ठानों, यज्ञों और प्रकृति पूजा को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है। नदी, वृक्ष, सूर्य और अग्नि जैसे प्राकृतिक तत्वों को पूजनीय माना जाता था, जो इस बात का संकेत देते हैं की उनकी संस्कृति प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने पर आधारित थी। सामाजिक संरचना भी परंपराओं और मान्यताओं से प्रभावित थी, जहाँ परिवार और समुदाय के स्तरों पर सांस्कृतिक नियमों का पालन किया जाता था। पुरातात्विक साक्ष्य भी इस सांस्कृतिक समृद्धि की पुष्टि करते हैं कि राखी गढ़ी, कालीबंगा और बनावली जैसे स्थलों से प्राप्त मृदभांड, मूर्तियाँ, मुहरें और अन्य कलात्मक वस्तुएं यह दर्शाती है की यहाँ के लोगों में सौन्दर्य बोध और धार्मिक प्रतीकों के प्रति गहरी समझ थी। इन वस्तुओं पर अंकित चिन्ह और आकृतियाँ न केवल कला का परिचय देती हैं, बल्कि धार्मिक विश्वास और प्रतीकों की भी झलक प्रस्तुत करती हैं। सरस्वती

---

[12] आर. एस. शर्मा, इंडियाज एंशिएंट पास्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005, पी पी. 60–85.

नदी बेसिन की धार्मिक विरासत का एक महत्वपूर्ण पहलू ज्ञान और शिक्षा से इसका संबंध है। प्राचीन भारतीय परंपरा में सरस्वती को विधा की देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया, जो इस क्षेत्र के बौद्धिक विकास को दर्शाता है। यह संकेत करता है की यहाँ न केवल भौतिक उन्नति हुई, बल्कि विचार, दर्शन और ज्ञान की परंपरा भी विकसित हुई। वैदिक मंत्रों और परंपराओं का संरक्षण और प्रसार इसी क्षेत्र में हुआ, जिसने आगे चलकर भारतीय सांस्कृ तिक की आधारशिला को मजबूत किया।

सामाजिक जीवन में भी सांस्कृतिक तत्वों का गहरा प्रभाव था। त्योहारों, अनुष्ठानों और सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से समुदाय में एकता और सहयोग की भावना विकसित होती थी, बल्कि सामूहिक जीवन का अभिन्न अंग थी, जो समाज को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती थी। इस प्रकार, संस्कृति और धर्म ने मिलकर एक सुदृढ्ढ सामाजिक ढांचे का निर्माण किया। समय के साथ जब प्राकृतिक कारणों से नदी का प्रवाह क्षीण हुआ, तब भी इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और धार्मिक परम्पराएं समाप्त नहीं हुई, बल्कि अन्य क्षेत्रों में फैल गई। यही कारण है की आज भी भारतीय संस्कृति में सरस्वती का महत्व बना हुआ है और उसे ज्ञान, पवित्रता और परंपरा के प्रतीक के रूप में स्मरण किया जाता है। इस प्रकार, सरस्वती नदी बेसिन की सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत न केवल प्राचीन समाज की झलक प्रस्तुत करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है की किस प्रकार आस्था, परंपरा और ज्ञान ने मिलकर एक समृद्ध सभ्यता का निर्माण किया।

सरस्वती नदी का लोप और उस के प्रभावः–

सरस्वती नदी का लोप भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है, जिसने उस समय के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। सरस्वती नदी, जिसे प्राचीन ग्रंथों में एक विशाल और प्रवाह मान नदी के रूप में वर्णित किया गया है, समय के साथ प्राकृतिक और भू–गरभीय कारणों से धीरे–धीरे क्षीण होती चली गई। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार हिमालय से आने वाली सहायक नदियों के मार्ग परिवर्तन, टेक्टोनिक गतिविधियां तथा जलवायु परिवर्तन, इस प्रक्रिया के प्रमुख कारण थे। विशेष रूप से जब सतलुज और यमुना जैसी नदियों ने अपना मार्ग बदल लिया, तो सरस्वती का मुख्य जल स्रोत कमजोर हो गया, जिससे इसका प्रवाह रुक–रुक कर होने लगा और अंततः: यह लुप्तप्राय हो गई। इस नदी के सूखने का प्रत्यक्ष प्रभाव उस विस्तृत क्षेत्र पर पड़ा जहाँ इसके किनारे विकसित सभ्यता फल–फूल रही थी। कृषि, जो इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का आधार थी, जल की कमी के कारण प्रभावित हुई। उपजाऊ भूमि धीरे–धीरे शुष्क होने लगी, जिससे फसलों का उत्पादन घटा और लोगों के जीवनयापन पर संकट उत्पन्न हुआ। परिणामस्वरूप, लोगों को अपने निवास स्थान छोड़कर अन्य जलस्रोतों की ओर पलायन करना पड़ा।

आर्थिक दृष्टि से भी इस घटना के गंभीर परिणाम हुए। कृषि उत्पादन में कमी आने से व्यापार और विनिमय प्रणाली प्रभावित हुई। जो क्षेत्र पहले समृद्ध व्यापारिक केंद्र थे, वे धीरे–धीरे

निष्क्रिय होने लगे। इससे व्यापक स्तर पर आर्थिक असंतुलन उत्पन्न हुआ और समाज की संरचना में परिवर्तन आने लगा। सांस्कृतिक और धार्मिक स्तर पर भी सरस्वती नदी के लोप का प्रभाव देखा गया। जहाँ पहले यह नदी आस्था और अनुष्ठानों का केंद्र थी, उसके लुप्त होने के बाद भी उसकी स्मृति और महता समाप्त नहीं हुई। ऋग्वेद तथा अन्य वैदिक परंपराओं में सरस्वती का महत्व बना रहा, जिससे यह स्पष्ट होता है की भौतिक रूप से नदी के समाप्त हो जाने के बावजूद उसका सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रभाव लंबे समय तक जीवित रहा। इस परिवर्तन ने मानव समुदायों को नई परिस्थितियों के अनुसार ढलने के लिए विवश किया। लोगों ने क्षेत्रों में बसना प्रारंभ किया, जिससे सांस्कृतिक तत्वों का प्रसार अन्य भागों में हुआ। इस प्रकार सरस्वती नदी का लोप केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं थी, बल्कि यह एक ऐसा मोड था जिसने सभ्यता के स्वरूप, उसकी दिशा और उसके विकास को गहराई से प्रभावित किया।

निष्कर्षः—

अतः यह स्पष्ट होता है की सरस्वती नदी बेसिन प्राचीन भारत के विकास की एक प्रमुख धुरी रहा, जहाँ अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियाँ, जल संसाधनों और मानवीय प्रयासों के समन्वय से एक उन्नत सभ्यता का निर्माण हुआ। इस क्षेत्र में कृषि, नगरीय व्यवस्था, व्यापारिक गतिविधियां तथा तकनीकी कौशल का संतुलित विस्तार दिखाई देता है, जो इसे एक संगठित और समृद्ध समाज के रूप में स्थापित करता है।

सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, जहाँ ज्ञान, परम्पराएं और आस्थाएँ विकसित होकर व्यापक रूप से प्रसारित हुई। ऋग्वेद में प्राप्त उल्लेख इस बात की पुष्टि करते हैं की यह क्षेत्र केवल भौतिक उन्नति तक सीमित नहीं था, बल्कि बौद्धिक और धार्मिक चेतन का भी केंद्र था। हालांकि प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण नदी का लोप हुआ, जिससे यहाँ की बसा वट और संरचनाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा, फिर भी इस क्षेत्र की विकसित समाप्त नहीं हुई। इसके विपरीत, यहाँ विकसित परम्पराएं, ज्ञान और जीवन पद्धतियाँ अन्य भागों में फैलकर भारतीय सभ्यता को नई दिशा देती रही। इस प्रकार, सरस्वती नदी बेसिन का अध्ययन यह दर्शाता है की प्रकृति और मानव के पारस्परिक संबंधों ने किस प्रकार एक समृद्ध सभ्यता को जन्म दिया और उसके परिवर्तन ने इतिहास की धार को नया मोड प्रदान किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः—

1. गुप्ता, एस. पी. (1996). द इंडस सरस्वती सिविलाइजेशन. प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 45—60, 120—145.
2. पॉसेहल, ग्रेगरी एल. (2002). द इंडस सिविलाइजेशनः ए कंटेम्पररी पर्सपेक्टिव. अल्टामीरा प्रेस, पृ. 70—95, 100—130.
3. शर्मा, आर. एस. (2005). इंडियाज एंशिएंट पास्ट. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 60—85.

4. यशपाल एवं अन्य (1984). रिमोट सेंसिंग ऑफ द 'लॉस्ट' सरस्वती नदी. प्रोसीडिंग्स ऑफ इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज, पृ. 317–331.
5. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) (2012). सरस्वती नदी का रिमोट सेंसिंग एवं सैटेलाइट अध्ययन. भारत सरकार, पृ. 10–25.
6. जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (GSI) (2015). सरस्वती नदी के भू–वैज्ञानिक प्रमाण. भारत सरकार, पृ. 15–40.
7. ऋग्वेद. (मंडल 6 एवं 7), सूक्त 6.61, 7.95–96.